1137

## दिनांक 14 मार्च, 1985

सं. भो.वि./फरीदाबाद/16-85/10211.—-पूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं • सुप्रीम इन्जीनियरिंग इण्डस्ट्रीज प्रा० लि॰ प्लाट नं० 5, सेक्टर-6, फरीदाबाद के धमिक श्री चन्द्रमा सिंह स्या उसके प्रवश्यकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखिस मामले में कोई धोदोगिक विवाद है ;

भौर चूंकि हरियाणा से राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिश्य करना वांखनीय समझते हैं ;

इस लिए, भव, भीयोपिक विवाद सिंधिनियम, 1947, की धारा 10 की जपधारा (1) के खण्ड (म) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 5415—3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के खण्ड पहुंते हुए अधिसूच सं. 11495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त प्रधिनियम की खारा 7 के भधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादमस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्विक्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादमस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

क्या श्री जन्द्रमा सिंह की सेवामों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है? सं. श्रो.वि./फरीदाबाद./16-85/10218.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. सुप्रीम इन्जीनियरिंग इण्डस्ट्रीज प्रा. लि., प्लाट नं० 5, सैक्टर-6 फरीदाबाद के श्रमिक श्री भरत) भगत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

भीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेंतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 5415—3—श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं. 11495—जी—श्रम 88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धररा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवाद प्रस्त या उसके सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्याय-निणय के लिये निर्विष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री भरत भगत की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं. मो.वि./फरीदाबाद/16-85/10225.-- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. सुप्रीम इन्जिनियरिंग इन्डस्ट्रीज प्रा. ति. प्ताट नं. 5, सैक्टर-6, फरीदाबाद के अभिक श्री श्रीनिवास सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद सिखत मामले में कोई मौदोगिक विवाद है ;

भीर पृक्ति हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णंग हेतु निर्विष्ट करना वांश्रनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, औद्योगिक विवाद श्रविनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रविसूचना सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रविसूचना सं 11495-जी-श्रम 88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रवि-ियम की धारा 7 के श्रवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादपस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रविकों के बीच या तो विवादपस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री श्रीनिवास सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो. वि./फरीदाबाद/16-85/10232-- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं सुप्रीम इन्जीनियरिंग इन्डस्ट्रीज प्रा॰ लि॰, प्लाटनं 5, सैंक्टर 6, फरीदाबाद के श्रमिक श्री शिव बन्शी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है ;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, भौद्योगिक विवाद मिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई कक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रीम्यूचना छं 5415-3-अम/68/15254, दिनांक 20 षून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रविसूचना सं 11495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवंरी, 1958, द्वारा उक्त श्रविनियम की घारा 7 के श्रवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भामला न्याय-निर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भ्रयवा सम्बन्धित मामला है :---

> क्या श्री शिव ब<sup>न्</sup>र्शा की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो व<mark>ह किस राहत का हकदार</mark> है ?

सं. भो.वि./फ़रीदाबाद/5-85/10246.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. कनवल इण्डस्ट्रीज, 5-सी/46, एन० श्राई० टी०, फरीदाबाद के श्रमिक भी श्रमरजीत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बार लिखित सामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

## भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना नांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, मब मौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मित्तयों का प्रयोग करत हुए, हरियाणा के राज्यपा त इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1958, के साथ पहते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम-88/57/11245, दिनांक 7 करवरी, 1958, द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित स्रम न्यायासय, फरीदाबाद को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला ग्यायनिर्णय के लिए निदिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा धमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अध्या सम्बन्धित मामला है:---

· क्या श्री ग्रमरजीत की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो. वि./फ़रीदाबाद/5-85/10253.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. कंनवल इण्डस्ट्रीज, 5-सी/46, एन. ग्राई. टी., फरीदाबाद, के श्रमिक श्री हरिन्द्र श्री वास्तव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, धौद्योगिक विवाद श्रवितियम, 1947, की घारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रविभूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनोंक 20 जुन, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रविशूचना सं. 11495-जी-भम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रविनियम की घारा 7 के धिवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनण्य के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अपवा संबंधि मामला है:—

क्या श्री हरिन्द्रश्री वास्तव की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं• भो वि /फ़रीदाबाद / 5-85 / 10260 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ कंनवल इण्डस्ट्रीज, 5-सी / 46, एन० ग्राई० टी०, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री बन्धू यादव तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई प्रोबोणिक विवाद है;

## भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को ग्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वोछनीय समझते हैं 🕻 📜

इसलिए, ग्रब, भौदोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारः (1) के खर (ग) द्वारा प्रद न की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यताल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना मंं 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-अम-६६-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबन्धित मामला है:—

क्या श्री बन्धू यादव की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?